डॉ. यू.एस. आनन्द

पानी है अनमोल

पानी का संचय करें, पानी है अनमोल।
बिन पानी सब सून है, जीवन के हर बोल।।
पानी जीवन रक्षक है, पानी है सिरमौर।
खुशियों का आगार है, पानी जीवन-डोर।।
पानी की महिमा बड़ी, किसको है यह ज्ञान।
इसको जो पहचान ले, वह है चतुर सुजान।।
पानी से मिलता हमें, जीवन का आधार।।
पानी ही करता सभी, सपनों को साकार।
पानी ही भरते सदा, फूलों में मुस्कान।
जिसको देखे जो कोई, उतरे सकल थकान।।
पानी का संचय करें, कहते हैं सब लोग।
कौन करे, कैसे करे, नहीं बताते लोग।।
जल का जो संचय करें, सच्चा वह इंसान।
ऐसे लोगों का सभी, करते हैं सम्मान।।
पानी पीने से मिटे, तन के सभी विकार।
रोग-शोक से मुक्त हो, सुखमय हो संसार।।
पानी को अमृत समझ, सदा करें सम्मान।
जल की रक्षा के लिए, दें औरों को ज्ञान।।
निकट भविष्य में एक दिन, जब होगा जल-युद्ध।
खोजेंगे तब लोग सब, पीने को जल शुद्ध।।

पीपल वाला गांव

नहीं गूंजते गांव में, अब आल्हा के गीत।
सहमें-सहमें लोग सब, रहते हैं भयभीत।।
बदले रीति-रिवाज अब, बदला है संगीत।
रिश्ते-नाते गांव के, बदल गए मनमीत।।
पगडंडी वीरान है, सूने हैं खलिहान।
सूनी है चौपाल तक, धड़कन है बेजान।।
हुए अचीन्हे लोग हैं, टूटे हैं सम्बन्ध।
शेष नहीं है गांव में, वन-तुलसी की गन्ध।।
धूप उगलती आग है, कहीं नहीं है छांव।
और पथिक है ढूंढ़ता, पीपल वाला गांव।।
मनभावन तुलसी नहीं, नहीं बरगदी छांव।
लगता है अब देश भी, बिन गौने का गांव।।
गंधहीन है मोतिया, चम्पा लगे उदास।
ऐसे वातावरण में, फूले कहां कपास।।
बचा नहीं अब गांव में, अपना कुछ भी यार।
मांगे से मिलता नहीं, पहले जैसा प्यार।।
कैसे-कैसे लोग अब, बसते मेरे गांव।
बात-बात पर खेलते, राजनीति के दांव।।
गांवों की पहचान है, बरगद, पीपल, शाल।
इन सब पेड़ों के बिना, गांव हुए बेहाल।।

दोहे : पर्यावरण के

कहते कुछ बनता नहीं, किसका लें हम नाम।
धरती को बंजर किया, जीना हुआ हराम।।
जंगल सूने हो गये, सूख गये सब खेत।
बिन वर्षा होने लगी, सारी धरती रेत।।
दूषित नदियां हो गई।, हो गये जल बेकार।
हुई हवा दूषित तभी, संकट में संसार।।
जनसंख्या इतनी बढ़ी, घटे अन्न-फल-मूल।
कब स्वीकारोगे भला, तुम अपनी यह भूल।।
बाग-बगीचा वन बिना, जन का क्या है मोल।
पेड़ों को मत काट अब, आंखें अपनी खोल।।
घर-घर में तुलसी रहे, और बाग में नीम।
पीपल, बरगद पास हों, आए नहीं हकीम।।
पेड़ लगाएं रोज हम, ऐसा करें प्रयास।
पेड़ हमारे मित्र हैं, पेड़ धरा की आस।।
मीठे-मीठे फल सदा, देते हैं उपकार।
पेड़ों से मिलता हमें, सच्चा, निर्मल प्यार।।

हरे-भरे जंगल जहां, लोग वहीं खुशहाल।
धरती उपजे सौ गुणा, कर दे मालामाल।।
जंगल, पेड़, पहाड़ से, वर्षा होती खूब।
खेतों में फसलें उगे, और मुलायम दूब।।
हरी-भरी धरती रहे, तब हो जन खुशहाल।
चलो लगाएं आज हम, महुआ, शीशम शाल।।
फूलों की खुशबू सदा, मन में भरे उमंग।
जीवन जीना सीख लो, हरियाली के संग।।
भाग रहा है आदमी, मचा हुआ है शोर।
मेघों को भी देख अब, नहीं नाचते मोर।
मेघों ने कुछ इस तरह, किया यहां उत्पात।
उमड़-घुमड़ कर रात-दिन, की अविरल बरसात।।
सूरज का अपहरण कर, मेघ हुए सिरमौर।
सहमी झुग्गी-झोपड़ी, देख अनवरत दौर।।

संपर्क करें:
डॉ. यू.एस. आनन्द
तेली पाड़ा मार्ग, दुमका-814 101, झारखंड
मो. नं. 9431945469